काल विभाजन

प्रारंभिक सामग्री

इतिहास के काल विभाजन का आधार एवं उद्देश्य :

- विभिन्न प्रकाशित, अप्रकाशित रचनाओं के साथ ही साथ विद्वानों द्वारा तमाम आलोचनात्माक व शोधपरक ग्रंथों और रचनाओं व रचनाकारों का परिचय देने वाली अनेक कृतियों को भी कालविभाजन और नामकरण की आधार सामग्री के रूप में लिया गया।
- समग्र साहित्य को खंडों, तत्वों, वर्गों आदि में विभाजित कर अध्ययन को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करने में काल विभाजन सहायक।
- अंग, उपांग तथा प्रवृत्तियों को समझने एवं स्पष्टता लाने के लिए आवश्यक।

काल विभाजन के आरंभिक प्रयास :

- 19वीं सदी से पूर्व विभिन्न कवियों और लेखकों द्वारा चौरासी वैष्णवन की वार्ता, दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता, भक्तमाल, कविमाला आदि जैसे कई ग्रंथों में हिन्दी कवियों के जीवनवृत्त और रचना कर्म का परिचय देकर हिन्दी साहित्य के इतिहास और कालक्रम को आधार देने के प्रयास किए जाते रहे हैं.
- किंतु हिंदी साहित्य इतिहास के काल विभाजन के आरंभिक प्रयासों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रयास गार्सा तांसी के **'इस्तवार द लितुरेत्यूर ऐन्दुई ऐ ऐन्दुस्तानी'**, जॉर्ज ग्रियर्सन के **'द मॉर्डन वर्नाक्यूलर ऑफ हिन्दुस्तान'** मौलवी करीमुद्दीन के **'तजकिरा-ई-शुअरा-ई-हिंदी'** (तबकातु शुआस) तथा शिवसिंग सेंगर द्वारा लिखित इतिहास ग्रंथ **'शिवसिंग सरोज'** में किए गए।
- गार्सा द तांसी के ग्रंथ 'इस्तवार द लितुरेत्यूर ऐन्दुई ऐ ऐन्दुस्तानी' को अधिकांश विद्वान हिंदी का प्रथम इतिहास मानते हैं।
- प्रथम तर्क संगत प्रयास सन 1934 ई. में मिश्र बंधुओं **(पं. गणेश बिहारी मिश्र, डॉ. श्याम बिहारी मिश्र एवं डॉ. शुकदेव बिहारी मिश्र)** द्वारा किया गया ।

प्रारंभिक सामग्री

❑इतिहास संबन्धित प्रारम्भिक सामग्री चौरासी वैष्णवन की वार्ता, चौरासी वैष्णवन की वार्ता, भक्तमाल, कविमाला और वार्ता साहित्य में मिलती है।

❑इनमें काल विभाजन और नामकरण की दृष्टि का अभाव हैं।

गार्सा द तासी

❑इस्त्वार द ल लितरेत्यूर ऐंदुई ऐ ऐंदुस्तानी (Histoire de la littérature hindoue e hindoustani) के लेखक गार्सा द तासी हैं। इस ग्रंथ को उर्दू - हिन्दी अथवा हिन्दुस्तानी साहित्य का सर्व प्रथम इतिहास ग्रंथ माना जाता है। इसमें हिन्दी उर्दू के अनेक कवियों और लेखकों की जीवनियाँ, ग्रंथ विवरण और उद्धरण हैं। इसका पहला संस्करण दो भागों में सन् 1839 तथा 1847 में प्रकाशित हुआ था। इस ग्रंथ ने हिन्दी साहित्य की दीर्घकालीन परम्परा के बिखराव को सूत्रबद्ध किया है। गार्सा द तासी का विभाजन एवं नामकरण का कोई प्रयास नहीं किया।

❑इसमें काल विभाजन और नामकरण की दृष्टि का अभाव हैं।

शिव सिंह सेंगर- शिव सिंह सरोज

शिव सिंह सेंगर की पुस्तक 'शिव सिंह सरोज' में काल विभाजन की ओर कोई संकेत नहीं है।

ग्रियर्सन

❑ग्रियर्सन उनके सम्मुख ऐसी समस्याएं थी जिनके कारण काल विभाजन पूर्णता सफल नहीं हो सका। सामग्री को यथासंभव कालक्रमानुसार प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया। यह सर्वत्र सरल नहीं रहा और कतिपय स्थलों पर तो यह असंभव सिद्ध हुआ। उनका काल विभाजन है- चारण काल 1000 से 1300 ई०, 15वीं शती का धार्मिक पुनर्जागरण, जायसी की प्रेम कविता, ब्रज का कृष्ण संप्रदाय, मुगल दरबार, तुलसीदास, रीति काव्य, तुलसीदास के अन्य परवर्ती, 18वीं शताब्दी कंपनी के शासन काल में हिंदुस्तान, महारानी विक्टोरिया का शासनकाल में हिंदुस्तान।

❑इन्होंने का विभाजन का प्रथम प्रयास किया भले ही उसमें कमियां रही हों। इसलिए इनका नाम महत्वपूर्ण है।

मिश्रबंधु- मिश्रबंधु विनोद

मिश्रबंधूओं द्वारा अपनी रचना 'मिश्रबंधु-बिनोद' (1913 में तीन भाग और 1929 में चौथा भाग) में हिन्दी साहित्य के इतिहास को 5 भागों और उपभागों में बांटा -

1. आरंभिक काल : पूर्वारंभिक काल (700-1343 वि.)
   उत्तराम्भिक काल (1344-1444 वि.)
2. माध्यमिक काल : पूर्व माध्यमिक काल (1445-1560 वि.)
   प्रौढ़ मध्य काल (1561 -1160 वि.)
3. अलंकृत काल : पूर्वालंकृत काल (1681-1790 वि.)
   उत्तरालंकृत काल (1791 -1889 वि.)
4. परिवर्तन काल : (1890-1925 वि.)
5. वर्तमान काल : 1(925 वि. से अब तक)

डॉ. रामचन्द्र शुक्ल

हिन्दी साहित्य का इतिहास (1929)

1. आदिकाल (वीरगाथा काल) : 1050-1375 वि.
2. पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) : 1375-1700 वि.
3. उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) : 1700 -1900 वि.
5. आधुनिक काल (गद्यकाल) : 1900 वि. से अब तक

डॉ. राम कुमार वर्मा

हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास (1938)

1. संधि काल : 750-1000 वि.
2. चारण काल काल : 1000-1375 वि.
3. भक्तिकाल : 1375-1700 वि.
4. रीतिकाल : 1700 -1900 वि.
5. आधुनिक काल : 1900 वि. से अब तक

डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त

हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (1938)

1. प्रारम्भिक काल : 1189-1350 वि
2. मध्य काल :

    पूर्व मध्यकाल 1350-1600 वि.

    उत्तर मध्यकाल 1600-1857 वि.
3. आधुनिक काल : 1857 वि. से अब तक